रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ४: पश्चिमी सूर्योदय (पश्चिम की भोर वेला)

'पश्चिमी सूर्योदय', पश्चिम की भोर वेला, हकीकी साहिब नज़र जिन्होंने मानव मन को अज्ञान की गहरी नींद से जगाने की मिसाल कायम की। 'उत्तरकोशल' में गुरु नानक तर्क-बुद्धि का आह्वान करते हैं।

पड़िआ बूझै सो परवाण ॥
जिस सिर दरगह का नीसाण ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

जो पढ़ कर समझ लेते हैं वह गुणवान हैं।
उनके सिर पर परम विवेक की छाप होती है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

काबिलियत हासिल करना किसी इल्मी धारणा और उसके हक़ीक़ी पक्ष को समझना है। गुरु नानक की उदासियों में यह दोनों पहलू आपस में जुड़े हुए हैं और यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक मूल्यवान दिशा-निर्देशों का ख़ज़ाना है।

सिंधु पट्टी में, पंजाब पांच दरियाओं की धरती है, जहां संस्कृतियों की विविधता सीधे जुड़ी हुई है, जहां गंगा-जमुनी की हिंदू सभ्यता और मध्य एशिया की इस्लामी सभ्यता मिल कर सांस्कृतिक ताने-बाने का निर्माण करती है।

गुरु नानक पाकपटन से सिंधु का इलाका छोड़कर पूर्व की ओर गंगा के इलाके की ओर चल पड़े। वह सतलुज को पार कर सिरसा, कराह, पिहोवा और कुरुक्षेत्र होते हुए हरिद्वार पहुंचे। वह पहले सिरसा गये।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान सरहद को कुछ निश्चित नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिए हम वाघा नाके से इंडिया जा रहे हैं और सिरसा से हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर सफ़र को आगे बढ़ाएंगे।

थार रेगिस्तान में स्थित ऐतिहासिक शहर सिरसा को तीसरी शताब्दी में सारस नामक राजा ने बसाया था।

हम गुरु नानक के सिरसा आने की याद में बने गुरूद्वारा श्री चिल्ला साहिब आये हैं।

इस जगह के सीना-ब-सीना चलते आ रहे इतिहास का पहले वाली 'जन्म-साखियों' में उल्लेख नहीं मिलता। मुँह ज़बानी इतिहास के अनुसार गुरु नानक फ़कीरों के स्थानीय जलसे में गये थे। गुरु नानक की पोशाक से उन्हें मुस्लिम या हिंदू के रूप में नहीं पहचाना जा सकता था। उलझन में फंसे फ़कीरों ने उनके मज़हब के में बारे सवाल किया तो गुरु नानक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि अगर उनकी शिनाख़्त मनुष्य के तौर पर उभरती है तो जात और नस्ल की बुनियाद पर होते भेदभाव ख़त्म हो सकते हैं।

जाणह जोत न पूछह जाती आगै जात न हे ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

आंतरिक प्रकाश को पहचानो और अंश-वंश के बारे में मत पूछो। रूहानियत में कोई असमानता नहीं होती।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक को हर जीव में कायनाती प्रकाश का निवास दिखाई दीया। जब इस ज्योत का प्रकाश होता है तब मनुष्य के भीतर धरम का प्रकाश होता है, जिसकी रौशनी में आपके, मेरे और कादर के बीच का फ़ासला मिट जाता है।

सिरसा से गुरु नानक और भाई मरदाना काराह गांव की ओर चल पड़े जो पिहोवा कस्बे के बाहर की तरफ है।

हम गुरु नानक के काराह आने की याद में बने ऐतिहासिक गुरुद्वारे आये हैं जो कैथल रियासत के राजा उदय सिंह ने बनवाया था।

गुरुद्वारे की तख़ती पर दिलचस्प कथा की नक्षाकारी है कि कैसे क्षेत्रीय पंडित का अहंकार तोड़ने के लिए गुरु नानक ने मुर्दा ऊँट को जिंदा कर दिया था। इस कथा का हवाला पहले वाली 'जन्मसाखियों' में नहीं मिलता।

जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥

(राग रामकली, गुरु नानक)

कायनाती ऊर्जा सब कुछ बनाती है वह तबाह भी करती है।
उसके बग़ैर दूसरा कुछ नहीं है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

जो तामीर करता है वो गिराता भी है। इसी तरह अगर अंहकार वाला जीव कोशिश करे तो अहंकार से छुटकारा पा सकता है।

मैं समझता हूं कि संवाद के रास्ते गुरु नानक ने पंडित की ख़ुदाई फिर से बहाल कर दी होगी। यह भी हो सकता है कि क्षेत्रीय रीत में दर्ज हुआ मुर्दा ऊँठ, प्रतीक के तौर पर पंडित की चेतना का रूपक हो, जिसे गुरु नानक के शब्दों ने उस के अहंकार के कारण हुई आत्मिक मौत से पुनर्जीवित किया हो।

काराह से गुरु नानक और भाई मरदाना ने पेहोवा की यात्रा की जो महाभारत की लड़ाई में दर्ज हुआ प्राचीन कस्बा है।

हम अब हिन्दू मज़हब के मज़हबी स्थान 'सन्निहित सरोवर' पर जा रहे हैं। माना जाता है कि अब विलुप्त हो चुकी सरस्वती नदी इस इलाके में बहती थी और इस सरोवर में सरस्वती का पवित्र पानी है।

अमरदीप सिंह: हिन्दू मज़हब के पुरातन ग्रन्थों में पेहोवा का ज़िक्र मज़हबी अहमियत के हवाले से आता है।

लोग, पेहोवा इस विशास से आते हैं कि "सन्निहित सरोवर" के पवित्र पानी में स्नान करने से बिछड़ी हुई रूहों को चैन मिलता है, पाप धुल जाते हैं और सृषटिकरता को खुशी होती है. यह 'पिंडदान' के कर्मकांड के लिऐ भी जाना जाता है. बिछड़े लोगो की मुकती के लिए, चावल और गेहूं के आटे, सूखे दूध, शहद और तिलों से 'पिंड' उर्फ़ पेड़े बनते हैं जिनका इस्तेमाल पांडे पूजा के लिए करते हैं और 'दान' के तौर पर दक्षिणा की चाहत रखते हैं।

मुक्ति के वायदे के जरिये पाण्डों के द्वारा गुमराह किये जा रहे मासूम लोगों की हालत देख के गुरु नानक ने धिक्कार से गाया,

कूड़ बोल मुरदार खाइ ॥
अवरी नो समझावण जाइ ॥
मुठा आप मुहाए साथै ॥
नानक ऐसा आगू जापै ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

कूढ़ बोलना मुर्दा खाने के बराबर है परन्तु इसके बावजूद
फ़रेबी मनुष्य उपदेश देता रहता है।
जो खुद फ़रेबी है वह दूसरों के साथ फ़रेब ही कर सकता है।
नानक कहते हैं कि दुर्भाग्यवश ऐसे बंदे मार्गदर्शक बने हुए हैं।
(राग माझ, गुरु नानक)

रूहानी, सामाजिक और शासकीय मसले समाज को प्रभावित करते हैं। अगर अच्छाई को अपनाया हुआ कोई आदरणीय मार्गदर्शक इलाही गुणों वाला हो तो समाज की तरक्की होती है। दूसरी तरफ उल्टे रास्ते पर डालने वाला मार्गदर्शक तर्क-बुद्दि की राह रोकता है, मासूमों को गुमराह करता है और इससे सामाजिक और सियासी बेचैनी पैदा करता है। गुरु नानक तर्कशीलता वाली सोच का प्रकाश करने और ओछे कट्टरपंथी कर्मकांड और पाखंडी आकाओं को बेपर्दा करने में लगातार लगे रहते थे।

किसी मज़हबी स्थान पर घरम के नाम पर कर्मकांड के लिए आते श्रद्धालुओं को देखकर मैं हैरान होता हूँ कि कया मुक्ति का रास्ता इतना ही आसान है?

अलख अपार अपार साचा आप मार मिलाईऐ ॥
हउमै ममता लोभ जालह सबद मैल चुकाईऐ ॥
(राग बिलावल, गुरु नानक)

सर्वव्यापी ऊर्जा अकथनीय, अनंत अथाह और सत्य है।
स्वयं को खोकर ही इसे समझा जा सकता है।
जब अहंकार, मोह और लोभ के बन्धन धुल जाते हैं
तो मैल भस्म हो जाती है।
(राग बिलावल, गुरु नानक)

जो अपने अवगुणों से पार पा लेते हैं उनको ख़ुदाई नसीब होती है।

पेहोवा में गुरु नानक के आने की याद में 'सन्निहित सरोवर' के किनारे गुरुद्वारा शीशमहल बनाया गया है।

'सन्निहित सरोवर' से कुछ दूरी पर गुरूद्वारा बावली साहिब है जो गुरु नानक के आने की याद में बनाया गया है। यह गुरुद्वारा कैथल के राजा उदय सिंह ने बनवाया था।

बाबा जसबीर सिंह: इस तीर्थ को सरस्वती घाट कहा जाता है। हिंदुस्तान में तीन दरियाओं को पवित्र माना जाता है - गंगा, यमुना, सरस्वती। सरस्वती अपना वजूद खो चुकी है। पेहोवा में इस स्थान पर आज भी सरस्वती घाट मौजूद है। यहां के लोगों ने एक भ्रम फैला रखा था कि अगर यहां दान किया जाए तो वह सैकड़ों गुना बढ़ता है। गुरु नानक पातशाह लोगों के भ्रम-भुलेखे दूर करने के लिए यहां आये। जिस समय उन्होंने सबद गायन किया तब लोग इकट्ठा हो गये। वह जिस जगह बैठे थे, उस जगह एक बावड़ी मौजूद थी। समयानुसार उन्नीस सौ सैंतालीस का बंटवारा हुआ। इस इलाके में गुजरांवाला, शेखुपुरा के लोगों को ज़मीनें तक़सीम हुई। अन्य लोगों के साथ यहां सिख भी बस गये। उनको गुरु नानक साहिब की जगह के बारे में स्थानीय लोगों से पता चला तो वह इकट्ठा हो कर आये और यहां सफ़ाई करना शुरू की। सेवा-सँभाल करनी शुरू कर दी। उसके बाद गुरु नानक पातशाह के इस स्थान पर यह गुरूद्वारा बनाया गया।

हम सभी को विवेक की ख़ुशबू का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, परन्तु हमारी हालत कस्तूरी मृग जैसी है जो अपने अंदर की ख़ुशबू को बाहर ढूंढता फिरता रहता है।

आपणा आप पछाणिआ गुरमती सच समाइआ ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

जब मनुष्य सच्चे विवेक के रास्ते से अपनी पहचान करता है तब सच से ही घुल-मिल जाता है।
(राग मलार, गुरु नानक)

पेहोवा से गुरु नानक और भाई मरदाना, तीस किलोमीटर पूर्व की तरफ कुरुक्षेत्र की ओर चल पड़े।

हम अब ऐतिहासिक शहर कुरुक्षेत्र जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: कुरुक्षेत्र की धरती को 'धर्म-क्षेत्र' भी कहा जाता है, जहां महाभारत की लड़ाई के दौरान भगवान कृष्ण ने मानवीय नैतिकता के बारे में "गीता उपदेश" दिया था।

सूरज ग्रहण वाले दिन गुरु नानक कुरुक्षेत्र में पधारे जब संगत ज़ोर-शोर से सरोवर पर पहुंची हुई थी।

प्रचलित मान्यता के अनुसार सूरज ग्रहण वाले दिन राहु और केतु का मेल होता है जो अपशकुन जाना जाता है। यह माना जाता है कि कुरुक्षेत्र के 'ब्रह्म सरोवर' में स्नान करने वाले पाण्डों को दान दे कर सूरज ग्रहण के प्रकोप से बचा जा सकता है।

सूरज ग्रहण वाले दिन गुरु नानक पवित्र सरोवर के नज़दीक बैठ कर तीर्थ यात्रियों को देख रहे थे। सरोवर के नज़दीक ही किसी रियासत के गणमान्य व्यक्ति ने ठहराव किया था, कुछ समय पहले अपनी रियासत हार जाने वाले गणमान्य व्यक्ति ने आप शिकार किये हिरन को पकाना शुरू कर दिया। मज़हबी नियम के मुताबिक सूरज ग्रहण वाले दिन माँस खाना धार्मिक मानदंडो का उल्लंघन माना जाता था। इस कारण हांडी में से उठ रही महक के कारण पुजारी को गुस्सा आ गया और वह एक नामचीन पंडित नानू मल्ल के साथ उस गणमान्य व्यक्ति की जवाब-तलबी करने पहुंच गया। गुरु नानक ने अपने निराले अंदाज़ में उनके झगड़े में दखलअंदाज़ी की। उन्होंने संगत को सलाह दी कि उन्हें सच्चे व्यवहार के तीरों से भटकते मन के विकारों का शिकार करना चाहिए और अहंकार के ईंधन पर ध्यान की हांडी से अवगुणो को पकाना चाहिए।

मास मास कर मूरख झगड़े गिआन धिआन नही जाणै ॥
कउण मास कउण साग कहावै किस मह पाप समाणे ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

मांस खाने की नैतिकता के लिए मूर्ख लड़ते हैं। वे ज्ञान ध्यान का मार्ग भूल गए हैं।
मांस क्या है और वनस्पति क्या है? पाप किसको कहते हैं?
(राग मलार, गुरु नानक)

गुरु नानक ने नरमाई से तर्क दिया कि मांस खाने के साथ नैतिकता को जोड़ना बेकार है क्योंकि मांस और वनस्पति दोनों ही जीवन के रूप हैं। उन्होंने बताया कि एक ओर मज़हब के मुहाफ़िज़ मांस खाने की आलोचना

करते हैं और दूसरी ओर वह स्वयं सृष्टिकर्ता को प्रसन्न करने के लिए एक अनुष्ठान के रूप में मांस की क़ुरबानी देते हैं जिसमें सृष्टि का वास है।

सामाजिक असमानता और दोगलेपन की तफ़सील को गुरु नानक ने अपने गायन में पेश कीया।

मासहु ही मास ऊपजै मासहु सभो साक ॥
सतिगुर मिलिऐ हुकम बुझीऐ ताँ को आवै रास ॥
आपि छुटे नह छूटीऐ नानक बचन बिणास ॥१॥
(राग मलार, गुरु नानक)

मांस ही मांस पैदा करता है और मांस के माध्यम से सभी रिश्ते बनते हैं।
ज्ञान प्राप्त करने से कुदरत के नियमों की समझ होती है जिससे इन नियमों का पालन करने का मार्ग खुलता है।
यदि मनुष्य अपने मोह से छुटकारा नहीं पा लेता
नानक कहते हैं कि तो मनुष्य का ज्ञान नष्ट हो जाता है।
(राग मलार, गुरु नानक)

मनुष्य पूरी ताकत से इनकार करते हुए यह भूल जाता है कि हम सब मांस से बने हैं, मनुष्य मांस का भोग करता है, मांस को जन्म देता है और उस मांस से ही बना है जिसमें हाज़रा-हज़ूर का आवास है। इसके बावजूद अहंकारी मन अज्ञानता में फंसा हुआ है, अनैतिक कार्यों में लिप्त है जिसके परिणामस्वरूप वह अपने आसपास के लोगों के साथ जाति, मज़हब, स्थिति, रंग, नस्ल और लिंग के आधार पर भेदभाव करता है।

हम कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक गुरूद्वारे जा रहे हैं जो 'ब्रह्म सरोवर' के नज़दीक ही है।

अमरदीप सिंह: गुरूद्वारा सिद्ध बट्टी पातशाही पहली, गुरु नानक के कुरुक्षेत्र में आने की याद में बना हुआ है।

यह गुरूद्वारा उन्नीसवीं सदी के शुरू में महाराजा रंजीत सिंह ने बनवाया था और अभी मौजूदा दौर में इसका नये सिरे से निर्माण किया गया है।

कुरुक्षेत्र से विदाई लेने से पहले मैं खगोल विज्ञान और रूहानियत के बारे सोच रहा हूँ कि सिर्जना का समुचित प्रसार एक ही झरने से निकलता है, अदृश्य से ज़ाहिर होने के लिए विस्तारित होता है और आख़िर में उसी एक में समा जाता है। क्या इसके मायने यह हैं कि सिर्जना और सृजनहार एक हैं? जब हम सभी उस सिर्जना का कण हैं तो सिर्जना के दूसरे पक्ष या यूं कहें कि सृजनहार से भय क्यों खाते हैं?

निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

सच के निडर और निरंकार होने में सृष्टि की हस्ती समाई है।
इसी हस्ती पर पूरी सृष्टि टिकी है।
(राग आसा, गुरु नानक)

भय ज़िंदगी की चुनौती कबूल करने की काबिलियत को जंग लगाता है। कुछ ग़लत करने का भय ही सच्चा है। बाकी हर भय झूठा है। ग्रह, तारे और ब्रह्मांड सिर्जनहारे की सृष्टि है। यह कोई नुकसान नहीं करते। हमारी ग़लत सोच और अमल नुकसान करते हैं।

कुछ समय कुरुक्षेत्र में ठहराव करने के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना पूर्व की ओर हरिद्वार के लिए चल पड़े।

अब हम हरिद्वार में 'हर-की-पौड़ी' जा रहे हैं।

हरिद्वार में गंगा के किनारे को 'हर-की-पौड़ी' कहते हैं। पवित्र गंगा में डुबकी लगाने के लिए लोग सदियों से हरिद्वार आ रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गंगा के किनारे बसा हरिद्वार दुनिया छोड़ चुके जीवों के अंतिम कर्मकांड का स्थान हैं।

गुरु नानक बैसाखी के त्योहार के दौरान हरिद्वार पहुंचे जब बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आये हुए थे। अलसुबह के समय, गुरु नानक ने देखा कि लोग कर्मकांड करते हुए मंत्रों का जाप कर रहे हैं और पूर्व दिशा में गंगा जल डाल रहे हैं । गुरु नानक ने इस तरह पानी डालने का कारण पूछा। पुजारी ने उत्तर दिया कि वह दिवंगत

पूर्वजों की आत्मिक शांति के लिए सूर्य को पानी दे रहे हैं। यह सुनकर आज़ाद ख़्याल वाले गुरु नानक ने उगते सूरज से मुंह घुमा लिया और पश्चिम की ओर पानी डालना शुरू कर दिया। परंपरा के ख़िलाफ़ चल रही प्रथा को देख लोग हैरान रह गये। पुजारी ने गुरु नानक को उगते सूरज की ओर पानी डालने को कहा। गुर नानक ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया कि वह पश्चिम की ओर पंजाब में अपने खेतों की सिंचाई कर रहे हैं। स्थापित प्रथाओं के विपरीत किए जा रहे अनुष्ठान को देखकर, आसपास की भीड़ चकित रह गई। पुजारी ने हंसते हुए कहा कि पश्चिम में पंजाब के खेतों तक पानी पहुंचना नामुमकिन है। गुरु नानक ने मुस्कुराते हुए पूछा, "यदि यह नामुमकिन है, तो यह अनुष्ठान प्रसाद उन पूर्वजों तक कैसे पहुंच सकता है जिनका निधन हो गया है?" यह तर्क अभेदनीय था। गुरु नानक ने किसी भी तरह का टकराव करने के बजाय खेल खेल में अनावश्यक कर्मकांड की निरर्थकता साबित की। उन्होंने मोक्ष की छवि के रहस्य से पर्दा उठा दिया और साफ़ कर दिया कि मनुष्य जीवित रहते हुए अपने कर्मों के परिणामों से छुटकारा पा सकता है।

कुबुध डूमणी कुदइआ कसाइण पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोध चंडाल ॥
कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नाल ॥
सच संजम करणी काराँ नावण नाउ जपेही ॥
नानक अगै ऊतम सेई जि पापाँ पंद न देही ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

बुरी बुधि डुमनी कसाई बेदिली निंदा नीच जात और दगाबाजी चंडाल के समान है।
किसी कर्म-कांड का क्या फ़ायदा है? जब चारों अवगुणों का मनुष्य के अंदर निवास हो ।
सत्य, संयम और अच्छे कर्म ही स्नान और नाम जपने के समान हैं।
नानक ने कहा कि वे मनुष्य सर्वश्रेष्ठ हैं जो अनैतिकता में नहीं पड़ते और ना ही इसे फैलाते हैं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक का गहरा संदेश ईमानदारी से रहित कर्मकांड के रास्ते नहीं बल्कि दयावान बन कर और दया बाँट कर प्रशंसा अर्जित करना था। मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी चेतना के सागर में गोता लगाने की इच्छा का पालन करें, संयम के दायरे में रह कर कायनात का ध्यान करें।

'हर-की-पौड़ी' से कुछ दुरी पर 'नानक वाड़ा' है जो गुरु नानक की हरिद्वार आने की याद में बना सबसे पुराना स्थान है। 'नानक वाड़ा' के निर्माण की सेवा गुरु हर राय ने 'उदासीन' साधु भगत भगवान को सौंपी थी। इस

जगह की व्यवस्था अभी भी 'डेरे' के पास है जो भगत भगवान के वंशज हैं। स्थानीय संगत के अनुसार उन्नीस सौ सैंतीस तक इस स्थान पर 'गुरु ग्रंथ साहिब' का प्रकाश था।

'नानक वाड़ा' से चलते हुए मैं सोच रहा हूं कि गुरु नानक ने ज्ञान के माध्यम से रूहानियत का मार्ग दिखाया। समय के साथ, इस ख़्याल की जगह गुरु नानक की मूर्तियों ने ले ली है।

अब हम 'गुरु नानक अन्न-क्षेत्र' जा रहे हैं जो गंगा नदी के किनारे 'हर-की-पौड़ी' पर है। यह एक नानक नाम लेवा परिवार की संपत्ति है जिन्होंने 'लंगर' की परंपरा को बनाए रखा है। हालिया दौर में बने इस स्थान की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है।

हम उस जगह पर जा रहे हैं जहां पहले 'हर-की-पौड़ी' पर गुरुद्वारा ज्ञान गोदड़ी होता था। 'कुम्भ मेले' में उन्नीस सौ छियासठ में भगदड़ मचने के बाद इस इलाके के विकास के लिए यह सारी ज़मीन सरकार ने खरीद ली थी।

हम अब हरिद्वार से दस किलोमीटर दूर कनखल जा रहे हैं।

'सती घाट' के नज़दीक ऐतिहासिक गुरुद्वारा डेरा बाबा दरगाह सिंह है, जो गुरु अमरदास के आने की याद में बनाया गया है।

अमरदीप सिंह: हरिद्वार से कोटद्वार जाते हुए गुरु नानक ने कनखल में ठहराव किया। बाद में गुरु अमरदास भी इस स्थान पर आये थे।

इस गुरूद्वारे का इंतज़ाम 'निर्मला पंचायती अखाडा' के हाथ में है जो पटियाला की फुलकियां रियासत ने बनवाया था।

सिखों में 'निर्मला' विद्वानों का समूह हैं।

गुरु नानक ने अपने विशिष्ट अंदाज़ में गहरा संदेश दिया कि अज्ञानता, मनुष्य को कर्मकांड के जाल में फंसा देती है।

सदियां बीत जाने के बाद भी हम गहरी नींद में सोये हुए हैं।

रैण गवाई सोइ कै दिवस गवाइआ खाइ ॥
हीरे जैसा जनम है कउडी बदले जाइ ॥
(राग गोड़ी बैरागन, गुरु नानक)

रातें सोकर निकाल दी हैं और दिन खाकर गुज़ार दिये हैं।
मानव जन्म एक दुर्लभ हीरा है जो पदार्थ की लालसा में बर्बाद हो रहा है।
(राग गोड़ी बैरागन, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ४: पश्चिमी सूर्योदय (पश्चिम की भोर वेला)

ये चर्चा संकेत इस एपिसोड में प्रस्तुत गुरु नानक की पूर्वी यात्रा के प्रमुख ऐतिहासिक और दार्शनिक आयामों को समेटते हैं। ऐतिहासिक रूप से, ये संकेत उत्तरी भारत के प्रमुख धार्मिक केंद्रों से गुरु नानक की यात्रा का पता लगाते हैं, उनके विभिन्न धार्मिक व्यक्तित्वों और प्रथाओं के साथ हुए संवादों को दर्शाते हैं, और उन स्मारक स्थलों को उजागर करते हैं जो उनकी यात्राओं की स्मृति को संजोए हुए हैं। दार्शनिक रूप से, ये उनकी सार्वभौमिकता, निर्भयता, नैतिक नेतृत्व और बाहरी अनुष्ठानों की तुलना में आंतरिक परिवर्तन पर दिए गए संदेशों को खोजते हैं। इन चर्चा संकेतों के माध्यम से, गुरु नानक के इस खंड को समझने का एक आधार मिलता है, जो उनके धार्मिक विभाजनों से परे जाने, खोखले कर्मकांडों को चुनौती देने और ज्ञान व नैतिक जीवन के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना जागृत करने पर निरंतर जोर को दर्शाता है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक की पूर्वी यात्रा के दौरान पंजाब की सांस्कृतिक परिस्थितियाँ क्या थीं?**
   एपिसोड में पंजाब को सिंधु क्षेत्र की पाँच नदियों की भूमि के रूप में वर्णित किया गया है, जो विभिन्न संस्कृतियों का संगम रहा है, जहाँ मध्य एशियाई इस्लामी और गंगा के किनारे की हिंदू संस्कृतियाँ आपस में घुलमिल गईं। यह पंजाब को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मिश्रण और धार्मिक विविधता वाला क्षेत्र प्रस्तुत करता है। यह बहुसांस्कृतिक वातावरण गुरु नानक की धार्मिक संवाद की पद्धति को कैसे प्रभावित कर सकता था, जब वे पाकपट्टन से सतलुज नदी पार कर गंगा क्षेत्र की ओर बढ़े?

२. **सिरसा में फकीरों के साथ गुरु नानक की भेंट ने उनकी धार्मिक पहचान के दृष्टिकोण को कैसे प्रकट किया?**
   एपिसोड के अनुसार, जब गुरु नानक सिरसा पहुँचे, तो उनके वस्त्रों के कारण लोग यह तय नहीं कर सके कि वे मुस्लिम हैं या हिंदू। भ्रमित होकर, जब फकीरों ने उनसे उनके धार्मिक पृष्ठभूमि के बारे में पूछा, तो गुरु नानक मुस्कुराए और कहा कि यदि उन्हें मानव के रूप में देखा जाए, तो धर्म, जाति और संप्रदाय के आधार पर भेदभाव मिट सकता है। उन्होंने यह संदेश दिया कि सार्वभौमिक एकता के प्रकाश को पहचानों

और जाति पर ध्यान मत दो। दिव्यता में कोई भेदभाव नहीं है। सिरसा के धार्मिक मेले में हुई इस बातचीत से गुरु नानक के धार्मिक श्रेणियों से परे जाने और एकता की उनकी दृष्टि के बारे में क्या पता चलता है?

३. काराह गाँव में पंडित के साथ गुरु नानक की बातचीत की कथा का क्या महत्व है?

एपिसोड में उल्लेख है कि काराह गाँव में, गुरुद्वारे के बोर्ड पर यह कथा लिखी है कि गुरु नानक ने वहाँ एक मृत ऊँट को जीवित किया और उसे एक स्थानीय पंडित के साथ संवाद करने के लिए प्रेरित किया ताकि उसके अहंकार को तोड़ा जा सके। कथावाचक का सुझाव है कि संभवतः यह एक रूपकात्मक ढंग से एक गहरी सीख प्रदान करने का प्रयास हो सकता है, जहाँ मृत ऊँट पंडित की रुहानी रूप से मृत चेतना का प्रतीक हो सकता है, जो गुरु नानक के ज्ञानवर्धक सबदों के माध्यम से पुनर्जीवित होती है। इस व्याख्या से यह कैसे समझा जा सकता है कि गुरु नानक के धार्मिक विद्वानों के साथ हुए रूपकात्मक संवाद कालांतर में मिथकों के रूप में विकसित हो गए?

४. गुरु नानक ने पिहोवा में किन धार्मिक प्रथाओं का अवलोकन किया और उनका क्या उत्तर दिया?

एपिसोड में पिहोवा को महाभारत काल का एक प्राचीन नगर बताया गया है, जहाँ सनिहित सरोवर है, जिसे विलुप्त सरस्वती नदी के पवित्र जल का स्रोत माना जाता है। लोग यहाँ पिंडदान करने आते थे, जिसमें आटे, शहद और तिल से बने पिंड अर्पित किए जाते थे, और पुरोहित उनसे दान प्राप्त करते थे। इन प्रथाओं को देखकर, गुरु नानक ने कहा कि झूठ बोलना शव खाने के समान है। जो झूठ बोलते हैं और धर्म का उपदेश देते हैं, वे स्वयं को और दूसरों को धोखा देते हैं। गुरु नानक की इस प्रतिक्रिया से उनके व्यापक धार्मिक प्रथाओं की आलोचना और उनके समय के पुरोहित वर्ग की भूमिका के प्रति उनकी सोच को कैसे समझा जा सकता है?

५. सूर्य ग्रहण मेले के दौरान कुरुक्षेत्र में गुरु नानक की महत्वपूर्ण भेंट किससे हुई?

एपिसोड के अनुसार, कुरुक्षेत्र, जिसे 'धर्मक्षेत्र' भी कहा जाता है, वह स्थान है जहाँ श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के दौरान धर्म का उपदेश दिया था। लोग मानते थे कि ग्रहण के दौरान राहु और केतु की नकारात्मक ऊर्जा प्रबल होती है। इस मेले में, एक राजा जो हाल ही में अपना राज्य खो चुका था, पवित्र सरोवर के पास हिरण का मांस पका रहा था, जो धार्मिक मान्यताओं के विरुद्ध माना गया। इससे वहाँ के पुरोहितों में आक्रोश फैल गया। गुरु नानक ने हस्तक्षेप किया और रूपक के माध्यम से कहा कि सदाचार के तीर से चंचल मन के विकारों को मारो और अहंकार की अग्नि में इन विकारों को पकाओ। इस वृत्तांत के माध्यम से गुरु नानक ने पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं को कैसे चुनौती दी और ध्यान को गहरे रुहानी विचारों की ओर कैसे मोड़ा?

६. गुरु नानक ने हरिद्वार में कर्मकांडीय प्रथाओं को कैसे चुनौती दी?

एपिसोड के अनुसार, हरिद्वार के 'हर-की-पौड़ी' पर बैसाखी के मेले के दौरान, गुरु नानक ने देखा कि लोग मंत्रोच्चार करते हुए सूर्य की ओर मुख कर गंगा जल अर्पित कर रहे थे, यह मानते हुए कि इससे उनके पूर्वजों को मुक्ति मिलेगी। तब गुरु नानक ने पश्चिम की ओर मुख करके जल अर्पित किया और कहा कि वे अपने पंजाब के खेतों को पानी दे रहे हैं। जब पुरोहितों ने इसे असंभव बताया, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि यदि यह असंभव है, तो पूर्वजों तक जल कैसे पहुँच सकता है? इस वृत्तांत से गुरु नानक की पद्धति और स्थापित धार्मिक मान्यताओं को चुनौती देने के उनके दृष्टिकोण का क्या सार निकलता है?

७. गुरु नानक की पूर्वी यात्रा की स्मृति में कौन-कौन से स्मारक स्थल स्थापित किए गए, और वे उनकी विरासत के संरक्षण के बारे में हमें क्या बताते हैं?

एपिसोड में कई स्मृति स्थलों का उल्लेख किया गया है, जिनमें सिरसा का गुरुद्वारा चिल्ला साहिब, कैथल राज्य के राजा उदय सिंह द्वारा बनवाया गया काराह का एक ऐतिहासिक गुरुद्वारा, पेहोवा में स्थित गुरुद्वारा शीश महल और गुरुद्वारा बाओली साहिब (जो राजा उदय सिंह द्वारा भी बनवाया गया था), कुरुक्षेत्र में स्थित गुरुद्वारा सिद्ध बाटी पातशाही पहली (जो उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में महाराजा रणजीत सिंह द्वारा बनवाया गया था), और हरिद्वार में स्थित 'नानक वारा' (जिसे उदासीन संन्यासी भगत भगवान द्वारा बनवाया गया था, जिन्हें यह सेवा सातवें सिख गुरु, गुरु हर राय द्वारा सौंपी गई थी) शामिल हैं। ये विभिन्न स्मारक स्थल गुरु नानक की यात्राओं को अलग-अलग क्षेत्रों और समय काल में कैसे याद किया गया और संस्थागत रूप दिया गया, इसके बारे में क्या प्रकट करते हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की 'सार्वभौमिक ज्योत' संबंधी दर्शन धार्मिक पहचान को कैसे प्रभावित करता है?

एपिसोड में गुरु नानक का उद्धरण दिया गया है: सार्वभौमिक एकता की ज्योत को पहचानो और वंश पर जांच मत करो। दिव्यता में कोई भेदभाव नहीं है। इसमें आगे कहा गया है कि गुरु नानक ने सभी में निवास करने वाली 'ज्योत' को देखा। जब यह ज्ञान प्रज्वलित होता है, तो यह आंतरिक धर्म को प्रकाशित करता है, जो तुम, मैं और सृजनहार में कोई भेद नहीं देखता। यह सार्वभौमिक ज्योत का सिद्धांत धार्मिक विभाजनों को पार करने और सभी प्राणियों में दिव्यता की उपस्थिति को पहचानने के लिए एक दार्शनिक आधार कैसे प्रदान करता है?

२. **अहंकार और आध्यात्मिक रूपांतरण के संबंध में गुरु नानक क्या व्यक्त करते हैं?**

एपिसोड काराह गाँव में गुरु नानक का सबद प्रस्तुत करता है कि जो सर्वव्यापी शक्ति सृजन करती है, वही नाश भी करती है। इसके अतिरिक्त कोई और नहीं है। कथावाचक चिंतन करता है: जो सृजक है, वही संहारक भी है। इसी प्रकार, जो अहंकार में है, वह अपने प्रयासों से इसे त्याग भी सकता है। बाद में, कुरुक्षेत्र में एक मुखिया की घटना पर चिंतन करते हुए, एपिसोड उल्लेख करता है कि गुरु नानक ने अहंकार को जलाकर प्रज्वलित अग्नि का उपयोग करने की सलाह दी। गुरु नानक अहंकार के रूपांतरण को आध्यात्मिक विकास के केंद्र में कैसे रखते हैं, और इसके परिवर्तन के लिए वे कौन-कौन से उपाय सुझाते हैं?

३. **गुरु नानक मांसाहार की नैतिकता की कैसे आलोचना करते हैं, और इस विषय के माध्यम से वे कौन सा गहरा दार्शनिक संदेश देते हैं?**

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के दौरान मांसाहार से जुड़ी वृत्तांत में, गुरु नानक कहते हैं: मांसाहार की नैतिकता पर मूर्ख झगड़ते हैं। वे ज्ञान और चिंतन के मार्ग से विमुख रहते हैं। मांस क्या है और वनस्पति क्या है? कौन जाने कि कौन सा कर्म पापकर्म है! वे कहते हैं कि धर्म के रक्षक मांस भक्षण की निंदा करते हैं, लेकिन विडंबना यह है कि वही सृजनहार को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठानिक बलि देते हैं, जो जीवनशक्ति समस्त सृष्टि में निवास करती है। वे यह भी उल्लेख करते हैं कि मांस मांस से उत्पन्न होता है और सभी संबंध मांस के माध्यम से होते हैं। गुरु नानक इस स्पष्ट विरोधाभास का उपयोग जीवन के स्वभाव, धार्मिक पाखंड और सृजन की सार्वभौमिकता के बारे में गहरे दार्शनिक सत्य को उजागर करने के लिए कैसे करते हैं?

४. **गुरु नानक का भय के संबंध में दार्शनिक दृष्टिकोण क्या है, और यह सृजन की उनकी धारणा से कैसे जुड़ता है?**

एपिसोड गुरु नानक के इस विश्वास को प्रस्तुत करता है कि जो निराकार, निर्भय, सर्वव्यापी तत्व संपूर्ण सृष्टि का पोषण करता है, वही सत्य है। यह आगे बताता है कि भय हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने से रोकता है। केवल पापकर्म करने का भय वास्तविक है। अन्य सभी भय झूठे हैं। ग्रह, तारे और ब्रह्मांड सृजनहार की रचना होने के कारण अहानिकर हैं। हमारे गलत विचार और कर्म ही विनाशकारी होते हैं। निर्भयता की यह समझ गुरु नानक की ब्रह्मांडीय दृष्टि से कैसे जुड़ती है, और यह ग्रहण जैसे अंधविश्वासों की उनकी आलोचना को कैसे रेखांकित करती है?

५. **गुरु नानक शुद्धिकरण की अवधारणा को पुनर्परिभाषित कर इसे आंतरिक परिवर्तन के महत्व पर कैसे केंद्रित करते हैं?**

हरिद्वार में अनुष्ठानिक स्नान को देखते हुए, गुरु नानक इसका वैकल्पिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं कि मिथ्या मनोवृत्ति एक निम्न जाति की स्त्री है, निर्दयता एक कसाई, निंदा एक भंगी और छल एक चुड़ैल। जब तक ये चार विकार भीतर बैठे हैं, तब तक औपचारिक परहेज़ करने से क्या लाभ? ईमानदारी को अनुशासन, अच्छे कर्मों को अनुष्ठान और जागरूकता को पवित्र स्नान बनाओ। एपिसोड उल्लेख करता है कि गुरु नानक का गहन संदेश यह था कि सत्य की साधना कर संवेदनशीलता को अपनाकर उन्नति प्राप्त करें, न कि ऐसे पारंपरिक आचरणों के माध्यम से जो ईमानदारी से रहित हैं। यह विचार आध्यात्मिक समझ को बाहरी अनुष्ठानों से हटाकर आंतरिक नैतिक विकास की ओर कैसे पुनर्निर्देशित करता है?

६. सच्चे नेतृत्व के बारे में गुरु नानक क्या बताते हैं, और भटकाने वाले आध्यात्मिक मार्गदर्शकों के खतरे क्या हैं?

पिहोवा में, जब गुरु नानक ने देखा कि मासूम लोग मोक्ष की आशा में पुजारी वर्ग द्वारा प्रभावित और गुमराह हो रहे हैं, तो उन्होंने एक सच्चे नेता के गुणों का उल्लेख किया। एक सम्माननीय नेता, जिसमें सकारात्मक गुण और दिव्यता का समावेश हो, समाज को उन्नति प्रदान करने की क्षमता रखता है। परंतु एक दिशाहीन नेता तर्कशीलता को बाधित करता है, मासूमों को गुमराह करता है और इस प्रकार सामाजिक व राजनीतिक अशांति उत्पन्न करता है। गुरु नानक सच्चे नेतृत्व की क्या विशेषताएँ बताते हैं, और आध्यात्मिक मार्गदर्शकों पर वे क्या जिम्मेदारियाँ डालते हैं?

७. आत्म-पहचान संबंधी गुरु नानक की दार्शनिक अंतर्दृष्टि रुहानी जागरण से कैसे जुड़ती है?

एपिसोड गुरु नानक का यह उद्धरण प्रस्तुत करता है: सत्य ज्ञान के माध्यम से स्वयं को पहचानकर, मनुष्य सत्य में विलीन हो जाता है। एक अन्य सबद में वे कहते हैं कि सर्वव्यापी ऊर्जा अकथनीय, अनंत, असीम और सत्य है। इसे केवल आत्म-अहंकार त्यागने पर अनुभव किया जा सकता है। जब अहंकारमूलक आसक्ति और लोभ जलते हैं, तब ज्ञान असंतोष की मलिनता को दूर करता है। कथावाचक चिंतन करता है: हमारे भीतर ज्ञान की सुगंध विद्यमान है, फिर भी, कस्तूरी मृग की भाँति, हम इस अंतर्निहित सुगंध को बाहरी रूप से व्यर्थ खोजते रहते हैं। आत्म-पहचान और आंतरिक ज्ञान पर यह जोर पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं को कैसे चुनौती देता है, जो दिव्यता को बाहरी साधनों से खोजने का प्रयास करती हैं?

८. जीवन के मूल्य और इसे सर्वोत्तम रूप में जीने की अनिवार्यता के बारे में गुरु नानक क्या संकेत देते हैं?

एपिसोड गुरु नानक का यह सबद प्रस्तुत करता है कि रातें सोने में व्यर्थ चली जाती हैं और दिन खाने में नष्ट हो जाते हैं। मानव जीवन एक बहुमूल्य रत्न है, जो तुच्छ भौतिक सुखों के बदले व्यर्थ हो रहा है। इसके बाद कथावाचक यह अवलोकन करता है कि गुरु नानक ने अनोखे रूपक में यह गहरा दार्शनिक संदेश

दिया कि अज्ञान की निद्रा, जो लोगों को अनुष्ठानवाद में जकड़े रखती है, उन्हें भ्रमित कर रही है। शताब्दियाँ बीत गईं, फिर भी हम गहरी नींद में पड़े हैं! यह अवलोकन लोगों को अज्ञान से जागृत होने, अस्तित्व के मूल्य को पहचानने और अपनी ऊर्जा को सार्थक आध्यात्मिक विकास की दिशा में लगाने की चुनौती कैसे देता है?